RECENT EDUCATIONAL & PSYCHOLOGICAL RESEARCHES
RESEARCH
Vol. : 7, Issue : 2 & 3
Jul. - Dec. (2018), Joint Edition, Pages : 32 - 35
ISSN 2278 – 5949
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Research Journal

वैदिक कालीन शिक्षा में निहित शिक्षा के उद्देश्य

वी0के0 शर्मा[1] एवं ममता[2]

1. डीन, शिक्षा संकाय, मदरहुड विश्वविद्यालय, रूडकी, हरिद्वार
2. शोधार्थिनी, शिक्षा संकाय, मदरहुड विश्वविद्यालय, रूडकी, हरिद्वार

Received : 10/11/2018 *1st BPR* : 15/11/2018 *2nd BPR* : 22/11/2018 *Accepted* : 01/12/2018

ABSTRACT

प्राचीन काल में शिक्षा का आधार धर्म तथा धार्मिक क्रियायें थी। अनादिकाल से भारत में शिक्षा स्वयं के लिए नहीं अपितु धर्म के लिए प्रदान की जाती थी। यह मुक्ति और आत्मबोध का साधन थी। वैदिक काल में धार्मिकता, चरित्र निर्माण, नागरिक तथा सामाजिक कर्तव्य पालन की क्षमता, राष्ट्रीय संस्कृति का विकास करना आदि शिक्षा के लक्ष्य थे। ज्ञान और सत्यानुभूति वैदिक शिक्षा का आधार थी। छात्रों का चरित्र का निर्माण शिक्षा का एक अनिवार्य उद्देश्य माना जाता था। इसके अतिरिक्त वैदिक कालीन शिक्षा का उद्देश्य इस लोक में सर्वांगीण अभ्युदय और परलोक में परम निःश्रेयस की प्राप्ति करना था। साथ ही शिक्षा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति के साथ–साथ व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करती थी। शिक्षा का लक्ष्य छात्र का शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा सभी को परिष्कृत करना था। वैदिक शिक्षा के अंतर्गत तप और त्याग के प्रशिक्षण द्वारा अनिष्ट और कुसंकल्पों के विध्वंस के लिए व्यक्ति को इस योग्य बनाया जाता था कि वह समाज के अभ्युदय में उपयोगी सिद्ध हो सके।

भारतीय दर्शन में 'साविद्या या विमुक्तये' की प्रमुखता पायी जाती है। भारतीय दर्शन का मूल वेदों में पाया जाता है और भारतीय शिक्षा का सूत्रपात भी वैदिक ज्ञान से हुआ। फलस्वरूप भारतीय शिक्षा दर्शन का उद्गम भी वेद हैं। वैदिक शिक्षा दर्शन भारतीय शिक्षा में सबसे प्राचीन है। वैदिक शिक्षा दर्शन का अभिप्राय उस शिक्षा दर्शन से है जिसका आधार वेद हैं। वेदों के आधार पर शिक्षा को ज्ञान, आत्मा तथा ब्रह्म की खोज का साधन माना जाता है। वेदों के अनुसार शिक्षा पूर्णता तक पहुँचने का सद्मार्ग तथा मोक्ष का साधन है।

वैदिक काल में विद्या, ज्ञान, बोध और विनय पर आधारित थी, जिसका उद्देश्य व्यक्ति को सभ्य और उन्नत बनाना था। यह मात्र पुस्तकीय ज्ञान नहीं थी और न ही जीविका उपार्जन करने का साधन। इसका उददेश्य जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में मनुष्य को उन्नतशील और आदर्श मानव बनाना था। डॉ0 अल्तेकर ने इसी संदर्भ में कहा है, ''ईश्वर भक्ति, धार्मिकता की भावना, चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व का विकास, नागरिक तथा सामाजिक कर्तव्यों का पालन, सामाजिक कुशलता की उन्नति, राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण तथा प्रसार प्राचीन भारत में शिक्षा के उद्देश्य थे।''

वैदिक कालीन शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी को ऐसी नैतिक तथा आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करना था जिसके द्वारा वह समाज के प्रति अपने कर्तव्यों की पूर्ति सफलता पूर्वक कर सके। ऋग्वेद के अनुसार, ''शिक्षा के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति अपनी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक शक्तियों का विकास कर इस संसार में और परलोक में जीवन के वास्तविक सुख को प्राप्त करता था।''इस प्रकार व्यक्ति का सर्वागीण विकास शिक्षा की आधारशिला थी। वैदिक कालीन शिक्षा के उद्देश्यों को निम्न प्रकार स्पष्ट किया गया है–

1. सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् की अनुभूति : मानव जीवन का सर्वोत्कृष्ट लक्ष्य सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् की अनुभूति करना है। इस दृष्टि से शिक्षा का सर्वोत्तम उद्देश्य छात्रों को श्रेष्ठ कर्मों को करने योग्य बनाना है जिससे वे सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् की अनुभूति कर सके। वाक्, प्राण, चक्षु, श्रोत्र इत्यध्यात्मम् उपनिशद वाक्य द्वारा वाणी, प्राण, नेत्र और श्रोत्रादि शक्तियाँ आध्यात्मिक शक्तियाँ कही गई हैं, इनका विकास ही आध्यात्मिक शक्ति का विकास है। शिक्षा के द्वारा इन आध्यात्मिक शक्तियों का विकास किया जाना शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य है।
2. ईश्वर भक्ति एवं धार्मिकता का विकास : छात्रों में ईश्वर भक्ति और धार्मिकता की भावना का समावेश करना वैदिक कालीन शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य था। व्यक्ति को मुक्ति तभी प्राप्त हो सकती थी, जब वह ईश्वर भक्ति और धार्मिकता की भावना से परिपूर्ण हो। शिक्षा का प्रत्यक्ष उद्देश्य छात्र को समाज का धार्मिक सदस्य बनाना था। गुरूकुलों का वातावरण भी आध्यात्मिकता और धार्मिकता से परिपूर्ण होता था।

RESEARCH
RECENT EDUCATIONAL & PSYCHOLOGICAL RESEARCHES
Issue : 2 & 3, Vol. : 7, Jul.-Dec. (2018), Joint Edition, Pages : 32 - 35, ISSN 2278 – 5949

3. चरित्र निर्माण : वैदिक काल में व्यक्ति के उच्च चरित्र को ज्ञान से भी अधिक महत्व दिया जाता था। मनुस्मृति में लिखा है, ''अज्ञानी और चरित्रवान् व्यक्ति, सम्पूर्ण वेदों के ज्ञाता किन्तु चरित्रहीन विद्वान से कहीं अधिक श्रेष्ठ है।'' अतः शिक्षण काल में बालक के मन में नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था उत्पन्न की जाती थी। कठोर ब्रह्मचर्य भी चरित्र निर्माण में सहायक होता था। डॉ0 वेद मित्र का कथन है, ''छात्रों के चरित्र का निर्माण करना शिक्षा का एक अनिवार्य उद्देश्य माना जाता था।''
4. व्यक्तित्व का विकास : वैदिक काल में छात्रों के शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक – सभी पक्षों के सर्वांगीण एवं संतुलित विकास द्वारा व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करना भी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य था। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए छात्रों में आत्म–संयम, आत्म–सम्मान, आत्म–विश्वास जैसे गुणों का विकास किया जाता था।
5. नागरिक एवं सामाजिक कर्तव्यों का विकास : वैदिक काल में प्रत्येक व्यक्ति से यह आशा की जाती थी कि वह गृहस्थ जीवन व्यतीत करने के साथ अपने नागरिक और सामाजिक कर्तव्यों का पालन करे। शिक्षा द्वारा सुख–शान्ति और समृद्धि से परिपूर्ण जीवन के लिये पारस्परिक ऐक्य, सौहार्द और सद्भावना के बीज अंकुरित करने का प्रयास किया जाता था। ऋग्वेद का कथन है :–

   समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
   समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।
   अर्थात तुम्हारा संकल्प एक समान रहे और तुम्हारे हृदय एक विद्य एक समान हो, तुम्हारे मन एक समान हो, जिससे तुम्हारे परस्पर कार्य पूर्ण रूप से संगठित हो।
6. सामाजिक कुशलता की उन्नति : वैदिक काल में शिक्षा केवल मानसिक विकास ही नहीं करती थी, वरन् सामाजिक कुशलता में भी उन्नति करती थी, ताकि मनुष्य सरलता से अपनी जीविका का उपार्जन करके सुख में वृद्धि कर सके। डॉ0 आर0के0 मुकर्जीने लिखा है, ''शिक्षा पूर्णतया सैद्धान्तिक और साहित्यिक नहीं थी, वरन् किसी न किसी शिल्प से सम्बद्ध थी।''
7. राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण एवं प्रसार : वैदिक काल में राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण और प्रसार करना भी शिक्षा का आवश्यक उद्देश्य माना जाता था। शिक्षार्थियों को संस्कृति का ज्ञान प्रदान करके सांस्कृतिक विकास को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तान्तरित किया जाता था। इसके साथ सांस्कृतिक गौरव को एक स्थान से अन्य स्थानों तक फैलाने एवं प्रचारित करना भी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य था।
8. ज्ञान की उपलब्धि : ज्ञान प्राप्ति को वैदिक काल में शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य माना गया है। ज्ञान की उपलब्धि आध्यात्मिक और सांसारिक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण मानी गई थी। ऋग्वेद के निम्न मन्त्र से इस मत की प्रामाणिकता ज्ञात होती है –

   ओउम् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
   देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।
   अर्थात उस प्राण स्वरूप, दुःखनाशक, सुख स्वरूप, श्रेठ, तेजस्वी, पापनाशक, देव स्वरूप परमात्मा को हम अन्तरात्मा में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग पर प्रेरित करे। अथर्ववेद में भी कहा गया है :–
   वर्धयैनं ज्योतयैनं महते सौभगाय।
   संशितं चित् संतरं सं शिशाधि।।
   अर्थात व्यक्ति की बुद्धि विकसित हो, परिष्कृत हो, तीक्ष्ण हो, उन्नति की ओर अग्रसर हो तथा वह महान सौभाग्य प्राप्त करे।
9. सुखद एवं सम्पन्न सामाजिक जीवन व्यतीत करने योग्य बनाना : यह वैदिक कालीन शिक्षा का अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य माना जाता है। ऋग्वेद में भी सामाजिक दृष्टि से सम्पन्न एवं सुखद जीवन व्यतीत करने की ओर संकेत किया गया है –
   सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
   देवा भागं यथा पूर्वं संजानाना उपासते।।
   अर्थात हम सब एक साथ चले, एक साथ बोले, हमारे मन एक हो। प्राचीन समय में देवताओं का ऐसा ही आचरण रहा इसी कारण वे वंदनीय हैं।
10. कर्तव्यपालन एवं धर्मपालन की क्षमता प्रदान करना : वैदिककालीन शिक्षा का यह अन्य उद्देश्य कहा जा सकता है। मानव जीवन के चार प्रमुख लक्ष्य थे – धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। मानव से यह अपेक्षा की जाती थी कि वह धर्म, अर्थ तथा काम पर विजय प्राप्त कर अन्त में मोक्ष को प्राप्त करे। जीवन को चार आश्रमों में बांटा गया – ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास। इसमें क्रमशः छात्र धर्म, गृहस्थ धर्म, साधु–सन्त–सेवा–सत्संग धर्म तथा परमात्मा की प्राप्ति का धर्म पाया जाता था। शिक्षा मनुष्य को ऐसी क्षमता प्रदान करती थी जिससे वह कर्तव्य व धर्म का पालन कर सके।
11. आध्यात्मिकता की उपलब्धि कराना : आत्मा, परमात्मा एवं माया जगत के पारस्परिक गुम्फित सम्बन्धों का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष

RESEARCH
RECENT EDUCATIONAL & PSYCHOLOGICAL RESEARCHES
Issue : 2 & 3, Vol. : 7, Jul.-Dec. (2018), Joint Edition, Pages : 32 - 35, ISSN 2278 - 5949

ज्ञान मिलकर ही आध्यात्मिकता कहलाता है। प्रज्ञा के विकास से ही आध्यात्मिकता का विकास होता है और इसकी अनुभूति ही आध्यात्मिकता की उपलब्धि कहलाती है। यजुर्वेद में कहा गया है :–

विद्यां च अविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।

अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते।।

अर्थात जो व्यक्ति विद्या और अविद्या दोनों को जानता है, वह अविद्या के द्वारा मृत्यु को पार करता हुआ अर्थात सांसारिक सुख साधनों का उपभोग करता हुआ अन्त में अविद्या के द्वारा अमरता को पार करता है। वेद यदि सर्वांगीण जीवन के ज्ञानकोश है तो निश्चय ही उनके अध्ययन–अध्यापन का लक्ष्य जीवन को सभी प्रकार से समृद्ध, सम्पन्न, सुखी एवं सक्षम बनाना था या आध्यात्मिकता की उपलब्धि कराना था।

12. विद्या और बुद्धि का समन्वय : विद्या के साथ व्यवहारिक बुद्धि का होना आवश्यक है। व्यवहार–शून्य और लौकिक ज्ञान–शून्य विद्या को विद्या नहीं कहा जा सकता है। अतः अथर्ववेद का कथन है :–

शं सरस्वती सह धोभिरस्तु।

अर्थात सरस्वती (विद्या) के साथ धी (व्यवहार– बुद्धि) आवश्यक है। वैदिक कालीन शिक्षा का उद्देश्य विद्या और बुद्धि का समन्वय करना है।

13. आध्यात्म और भौतिकवाद के समन्वय का मूल्य निर्माण करना : वेद अध्यात्म और भौतिकवाद के समन्वय की शिक्षा देते हैं। मुंडक उपनिषद में वर्णनकिया गया है :–

द्वे विद्ये वेदितव्ये इति ह स्म यद् ब्रह्मविदो वदन्ति परा चैवापरा।

भौतिकवाद जीवन की ज्वलन्त समस्याओं को हल करता है और आध्यात्म अमरत्व एवं आत्मिक शान्ति प्रदान करता है। अतः वैदिक कालीन शिक्षा का एक उद्देश्य आध्यात्म और भौतिकवाद के मध्य समन्वय करना सिखाना है।

14. ज्ञान और कर्म का समन्वय सिखाना : शिक्षा वही सफल होती है, जिसमें कर्मठता की दीक्षा दी जाती है। प्रगतिशील, कर्मठ एवं सतत संघर्षशील बनाना शिक्षा का लक्ष्य है। अथर्ववेद के एक मंत्र में कहा गया है :–

इच्छन्ति देवाः सुन्वनतम्।

अर्थात देवता पुरूषार्थी को चाहते हैं, अकर्मण्य को नहीं।

ऋग्वेद में कर्तव्य एवं परिश्रम के विषय में कहा गया है :–

यादृश्समिमन्धायि तपस्यया विदद् स उ स्वयं वहते सो अरं करत्।

अर्थात मनुष्य जिस पदार्थ के ऐश्वर्य को प्राप्त करने में अपना मन लगा लेता है, उसे अपने पुरूषार्थ से प्राप्त कर ही लेता है। जो मनुष्य स्वयं परिश्रम करता है, वही अपने काम को पूरी तरह सिद्ध करता है। अतः वैदिक कालीन शिक्षा का उद्देश्य मानव को ज्ञान और कर्म का समन्वय करना सिखाना है।

उपर्युक्त उद्देश्यों से स्पष्ट है कि वैदिक कालीन शिक्षा का लक्ष्य मानव का सर्वागीण विकास करना था, उसके व्यक्तित्व का चतुर्मुखी विकास करना था जिससे वह जीवन में व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से सब कुछ कर सके और अंत में मुक्ति या मोक्ष को प्राप्त करने में समर्थ हो सके। इस प्रकार वेदों का गहन अध्ययन करने पर शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य प्रकाश में आते हैं – आचार शिक्षा और चरित्र–निर्माण, सत्यनिष्ठता, सत्याचरण। असत्य, झूठ, छल–प्रपंच आदि का परित्याग। जब तक चारित्रिक शुद्धि और परिष्कार नहीं होगा, तब तक विद्या फलीभूत नहीं होगी।

इस संदर्भ में प्रो0 टॉमस उडी का विचार है कि ''बौद्धिक प्रशिक्षण धार्मिक शिक्षण में केन्द्रित रहा, उसका प्रयोजन था वेदों को समझना, पुनीत तप का अभ्यास करना, विधि व दर्शन का ज्ञान उपलब्ध करना, अपने प्राकृतिक और अपने आध्यात्मिक पिता के प्रति श्रद्धा विकसित करना और इस प्रकार ब्रह्म से साम्यता प्राप्त करना।''

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. विष्णु पुराण 1/19/41
2. अल्तेकर, उद्धृत उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, द्वारा वालिया, जे0एस0, प्रकाशक : अहमपाल पब्लिशर्ज, पंजाब, संस्करण–2009, पृष्ठ सं0 339
3. ऋग्वेद 10/7/17
4. छन्दोग्योपनिषद, 3/12/2
5. मनुस्मृति, उद्धृत उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, द्वारा वालिया, जे0एस0, प्रकाशक : अहमपाल पब्लिशर्ज, पंजाब, संस्करण–2009, पृष्ठ सं0 339

RESEARCH
RECENT EDUCATIONAL & PSYCHOLOGICAL RESEARCHES
Issue : 2 & 3, Vol. : 7, Jul.-Dec. (2018), Joint Edition, Pages : 32 - 35, ISSN 2278 – 5949

6. मित्र, वेद, वही, पृष्ठ सं0 339
7. ऋग्वेद 10/19/3
8. मुकर्जी, आर0के0, उद्धृत उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, द्वारा वालिया, जे0एस0, प्रकाशक : अहमपाल पब्लिशर्ज, पंजाब, संस्करण–2009, पृष्ठ सं0 339
9. यजुर्वेद 3/35, ऋग्वेद 3/62/10, सामवेद 1462
10. अथर्ववेद 7/16/1
11. ऋग्वेद 10/191/2
12. यजुर्वेद 40/14, ईशावास्योपनिषद् 14
13. अथर्ववेद 19/11/2
14. मुण्डक उपनिषद् 1/1/4
15. अथर्ववेद 20/18/3
16. ऋग्वेद 4/44/8
17. उडी, टी0, द टीचर एण्ड एजूकेशन इन इमेजिंग इण्डिन सोसाइटी, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली, संस्करण–1983, पृष्ठ सं0 95